Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, SEPT-OCT, 2022, VOL- 10/73

भारत–अमेरिका विदेश सम्बन्धः वर्तमान परिदृश्य

विरेश कुमार, Ph.D.
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय; अलीगढ़ (उ0 प्र0)

Paper Received On: 25 OCTOBER 2022

Peer Reviewed On: 31 OCTOBER 2022

Published On: 01 NOVEMBER 2022

Abstract

भारत और अमेरिका सम्बन्धों के विषय में विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि, अमेरिकी सरकार ने भारत को कभी भी उच्च प्राथमिकता नहीं दी है। परन्तु कालान्तर में भारत ने अपनी सशक्त लोकतांत्रिक प्रक्रिया, विकासशील होते हुए विकसित राष्ट्रों की बराबरी करने का माद्दा, विज्ञान, एवं कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र विशेषकर साफ्टवेयर मैनपावर को तैयार करने के हब के रूप में, अमेरिका को मजबूर कर दिया कि वो भारत को महत्व दें। भारतीय परमाणु युग के जनक वैज्ञानिक होगी जहॉगीर भाभा ने भारतीय वैज्ञानिकों की एक युवा पीढ़ी को, विशेषज्ञ परमाणु वैज्ञानिकों के रूप में प्रशिक्षित किया। डॉ भाभा इस बात को भली–भॉति समझते थे कि परमाणु विज्ञान के क्षेत्र में शान्तिपूर्ण और सामरिक प्रयोग में प्रभाववित करने वाली एक बहुत छोटी सीमा रेखा होती है। 1998 के परमाणु विस्फोटों के पश्चात् अमेरिका ने भारत पर प्रतिबन्ध लगाये परन्तु 2003 आते–आते उसने स्वतः ही एक तरफा अपने ही प्रतिबन्धों को नजर अन्दाज करते हुए भारत के साथ परमाणु समझौता भी किया। भारत द्वारा अपनी परमाणु नीति को मजबूत बनाते हुए तथा अपनी सुरक्षा जरूरतों के अनुरूप अमेरिका को विश्वास में लेकर न्यूक्लियर शस्त्रों का विकास करना तथा परमाणु प्रसार को रोकने के लिए पूरी पारदर्शिता के साथ अमेरिका नीति का समर्थन करना। ताकि वैश्विक मुद्दों पर मतभेदों को दूर किया जा सके। क्योंकि इस बदलते परिवेश में जितनी जरूरत भारत को अमेरिका की ही उतनी ही जरूरत अमेरिका को भारत की है। इस कारण भारत आर्थिक एवं सैन्य क्षेत्र में तीव्र गति से प्रगति कर रह है। और दक्षिण एशिया के साथ–साथ एशियाई राष्ट्रों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

पारिभाषिक शब्दः *विदेश सम्बन्ध, अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबन्ध, मतभेद, निशस्त्रीकरण।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रविधि एवं पद्धतिः इस अध्ययन को पूर्ण करने में शोध प्रविधि के तौर पर (Analytical Historical) विश्लेषणात्मात्मक ऐतिहासिक प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं निष्कर्ष : स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू ने देश को वैज्ञानिक प्रगति की ओर ले जाने का प्रयास किया, उन्होने परमाणु शक्ति की भावी आवश्यकताओं को समझा, इस प्रकार नेहरू जी और भाभा की दूरदर्शी दृष्टि के फलस्वरूप भारत ने परमाणु युग का सूत्रपात हुआ। 10 अगस्त 1948 को देश में परमाणु ऊर्जा से

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सम्बन्धित समस्त गतिविधियों के नीति निर्धारण के लिए ''परमाणु ऊर्जा आयोग'' का गठन किया गया। विश्व मे परमाणु हथियारों की बढ.ती होड़ ने सम्पूर्ण विश्व को आंतकित बना रखा था। भारत ने अपनी शॉति की नीति के तहत इस परमाणु होड़ को कम करने के लिए निशस्त्रीकरण की नीति का सहारा लिया। भारत ने यद्यपि सदैव और मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों में विश्वास रखा लेकिन विश्व के कई देश उसके विपरीत सोचते थे। विश्व शान्ति को हामी भरने वाले गुपचुप हथियार बनाने मे जुटे हुए थे उससे नेहरू जी अनभिज्ञ नहीं थे। वे जहॉ एक और विश्व मैत्री बधुत्व और शान्ति की बात करते थे, वही राष्ट्र की सुरक्षा के मामले में पूरी तरह सजग थे। उन्ही के प्रेरणा से 1950 मे एशिया के पहले परमाणु ऊर्जा रिएक्टर ''अप्सरा'' ने काम करना शुरू कर दिया था। इसी प्रकार 1960 मे ''साइरस'' रिएक्टर का उद्घाटन करते हुए नेहरू जी ने स्पष्ट कहा था कि ''हम शानितपूर्वक विकासात्मक दिशा की ओर तेजी से अग्रसर हो रहे है जबकि हम परमाणु हथियार बना सकते हैं '' और उनकी इस बात को हमारे वैज्ञानिकों ने 1964 मे सच कर दिखाया था, जब उन्होंने ट्राम्बे में साइरस रिएक्टर मे प्रयोग के लिए किये गये परमाणु ईंधन का शोधन करते की क्षमता विकसित कर ली थी जिससे परमाणु बम मे प्रयोग होने वाला प्लूटोनियम तैयार होता है''।

1964 में चीन ने अपना पहला परमाणु परीक्षण किया। इस परीक्षण के जवाब में डॉ एच0 जे0 भाभा ने कहा था कि अगर भारत निश्चय कर ले तो मात्र 18 महीने में परमाणु बम बना सकता है। परमाणु बम बनाने की भारत की क्षमता पर किसी को संदेह नही होना चाहिये। चीन द्वारा परमाणु परीक्षण के जवाब में अमेरिका ने भारत से यह कहा था कि यदि भारत परमाणु परीक्षण कर हथियार बनाना चाहे तो अमेरिका उसकी मदद् कर सकता है लेकिन तब भारत में अपनी शांति और गुटनिरपेक्षता की नीति को मद्देनजर रखकर अमेरिकी प्रस्ताव ठुकरा दिय था। वैसे भी अमेरिकी मदद् से परमाणु शस्त्रों के विकास का मतलब था अमेरीकी दवाब मे आना, जबकि भारतीय वैज्ञानिकों ने परमाणु ऊर्जा के प्रयोग के मामले में आत्म निर्भर बनना इसकी सारी प्रौद्योगिकी आधार पर विकसित करने की नीति शुरू से ही अपना रखी थी। परमाणु हथियारों की विश्वव्यापी दौड़ को देखकर तथा अपने पड़ोसी देश चीन द्वारा लगातार परमाणु शस्त्रों का भण्डार बढ़ाते जाना भारत के लिए चिन्ता का विषय बन गया, हालाकि परमाणु बम बनाने की क्षमता तो भारत पहले ही विकसित कर चुका था लेकिन विस्फोट करने की राजनीतिक स्वीकृति नही मिली थी। 1965 मे सर्वप्रथम लाल बहादुर शास्त्री ने परमाणु परीक्षण के निर्देश दे दिये थे लेकिन अचानक उनकी मृत्यु हो जाने के कारण यह परीक्षण टल गया था फिर 1966 में होमी जहाँगीर भाभा की अचानक मृत्यु हो गयी। शास्त्री जी के बाद श्रीमती इन्दिरा गॉधी प्रधानमंत्री बनी तो उन्होने जहाँ विश्व राजनीति में अपने पिता नेहरू की शांति एव गुटनिरपेक्षता की नीति को बरकरार रखा और भारत की

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विदेश नीति को मजबूती प्रदान की। उन्होने देश की सुरक्षा को सर्वप्रथम प्रथम महत्व देते हुए 1970 से ही यह संकेत देना आरम्भ कर दिया कि भारत अब परमाणु परीक्षण करने में देर नही करेगा। श्रीमति गॉधी ने परमाणु परीक्षण के लिए कमेटी की नियुक्ति की जिसके सम्मुख के रूप में डा0 राजा रमन्ना परमाणु परीक्षण के लिए कार्य करने को कहा गया। डा0 राजा रमन्ना के पास चार मुख्य कार्य थेः–

1. उन्हें यह सुनिश्चित करना था कि परीक्षण की कौन सी विधि सबसे अधिक उपयुक्त होगी।
2. सैद्धान्तिक भौतिकी गणनाएं व कार्यो का सम्पादन पूरा करना।
3. एक उपयुक्त परीक्षण स्थल की खोज करना।
4. परीक्षण के लिए एक परमाणु बम का निर्माण करना। चूंकि भारत 1963 की आंशिक परीक्षण संधि का सदस्य था अतः वह भूमि पर परीक्षण नही कर सकता था, अतः भूमि के अन्दर परीक्षण करने का विकल्प चुनना पड़ा। इस कार्य के लिए भारतीय वैज्ञानिकों ने इम्पलोजन विधि के अन्तर्गत विस्फोट करने का निर्णय लिया जिसमें ईधन के रूप में प्लूटोनियम का प्रयोग किया जाता है। लेकिन इसमें सबसे जटिल कार्य उस स्थल का चुनाव करना था जहॉ इस परीक्षण को किया जाना था, क्योंकि प्रथम तो इस परीक्षण स्थल को आम जनजीवन से अलग हटकर होना चाहिये जिससे रेडियोएक्टिव किरणों का प्रभाव ने हो सके। दूसरे इसके प्रसार होने की स्थिति में क्षेत्रीय जनता पर इसका असर न हो, साथ ही भूमि के अन्दर जल या उसका बहाव न हो जिसमें रेडियों एक्टिव किरणें न मिल सके।

इस सभी बातों का ध्यान मे रखते हुए वैज्ञानिको ने राजस्थान के जैसलमेर जिले के पोखरण नामक स्थान का चुनाव किया। आखिरकार 18 मई 1974 को भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण किया। वह परमाणु परीक्षण जमीन मे 300 फीट की गहराई मे किया गया था। इस परमाणु विस्फोट में प्लूटोनियम का प्रयोग किया गया था तथा इसकी क्षमता 15 से 20 किलो टन थी। जापान के नामासकी शहर पर गिराये गये बम की प्रहारक क्षमता के बराबर इस बम की क्षमता थी। इस नाभिकीय विस्फोट का तापमान 10 करोड़ डिग्री मापा गया। अमेरिकी ऊर्जा आयोग ने विस्फोट की तीव्रता को मापा और उसके अनुसार विस्फोट की तीव्रता 20 किलोटन से कम थी। भारत द्वारा किये गये इस परमाणु विस्फोट की विशेषता यह थी कि इससे किसी प्रकार का नाभिकीय अवताप नही हुआ क्योकि नाभिकीय विस्फोट के उपरान्त रेडियों एक्टिव पदार्थ वायुमण्डल में तैरने लगते है और बाद में धीरे धीरे वे पृथ्वी के धरातल पर जमा होने लगते हैं । इसे ही नाभिकीय अवताप या न्यूक्लियर फौंल आउड कहा जाता है। इसके कारण जनजीवन तथ मानव स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। वनस्पतियों सूखने लगती है तथा मावव शरीर अस्थि, कैंसर, चर्म रोगों से ग्रस्त हो जाता है। यही कारण था कि भारतीय वैज्ञानिकों ने परमाणु विस्फोट के संभावित

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

दुष्परिणामों को रोकने की दिशा में पूरी व्यवस्था कर रखी थी। इस विस्फोट मे सबसे अधिक आश्चर्य कनाड़ा की सरकार को हुआ क्योकिं विस्फोट में प्रयुक्त प्लूटोरियम साइरस रिएक्टर के लिए कनाडा सरकार द्वारा किया गया था। कनाड़ा के प्रधानमंत्री ट्रेड यूनियन ने श्रीमती गाँधी को चेतावनी दी थी कि अगर भारत इन ईधनों का प्रयोग किसी भी प्रकार के परमाणु परीक्षण के लिए करेगा तो कनाड़ा अपनी पूरी नाभिकीय सहायता और आर्थिक सहायता रोक देगा।

साथ ही साथ भारत के इस परीक्षण के चीन–अमेरीका को अत्यधिक चिन्ता हुई। सोवियत संघ रूस के द्वारा जब 1979 में अफगानिस्तान में अपनी सेना भेजी गयी और भारत ने रूस के इस कदम का समर्थन किया तो सयुंक्त राज्य अमेरीका को ऐसा महसूस होने लगा कि भारत भविष्य में उसे चुनौती दे सकता है। इसलिए अमेरीका दक्षिण एशिया को अपने हितों को देखते हुए पाकिस्तान को रूसी सेना का मुकाबला करने के लिए भरपूर सैनिक मदद देने लगा। इस सैनिक सहायता के जरिये पाकिस्तान ने अपने परमाणु कार्यक्रम को तीव्रता प्रदान किया।

भारत तथा अन्य विकासशील देशों में चलाये जा रहे प्रक्षेपात्र कार्यक्रमों पर परोक्ष रूप से रोक लगाने के ध्येय से समूह–7 के सदस्य राष्ट्रों में अमेरीकी पहल पर एक नीति बनाई जिसे प्रक्षेपास्त्र प्रौद्योगिकी नियन्त्रण संधि (MTCR) कहा गया जिसके अन्तर्गत निम्न व्यवस्था की गयीः–

1. कोई भी देश किसी अन्य देश को क्रूज एवं बैलेस्टिक प्रक्षेपास्त्रों के निर्माण से सम्बन्धित कोई प्रौद्योगिकी, उपकरण या सेवायें उपलब्ध नही करायेगा तथा इसका उल्लघंन करने वाले देश पर आर्थिक प्रतिबन्ध लगाया जायेगा।
2. परमाणु अस्त्र ले जाने वाले प्रक्षेपास्त्रों का विकास, निर्माण एवं उत्पादन को हतोत्साहित किया जायेगा। अमेरीका द्वारा चली गयी इस कूटनीतिक चाल का सीधा वर्ग यह था कि भारत अपने मिसाईल कार्यक्रम को स्थगित कर दे। इस प्रकार अमेरीका MTCR के माध्यम से भारत को अत्मनिर्भर बनने से रोकना चाहता था।

भारत के परमाणु परीक्षणों के बाद अमेरीका ने सर्वप्रथम मई 1998 मे ही भारत मे विरूद्ध आर्थिक प्रतिबन्ध लगा दिया और भारत को परमाणु शस्त्र सम्पन्न देश मानने से इन्कार करते हुए यह दवाब डाला कि भारत ओर परमाणु शक्ति के रूप में परमाणु अप्रसार संधि (N.P.T) तथा व्यापक परमाणु परीक्षण निषेध संधि (C.T.B.T) पर हस्ताक्षर करे।

भारत के परमाणु परीक्षणों के बाद अमेरिका द्वारा अपनाई गई भारत विरोधी नीति का चीन ने पूर्ण समर्थन किया। कनाड़ा ने कहा कि ‘‘हम भारत से परमाणु हथियार कार्यक्रम छोड़ने को कहते है और भविष्य में भारत को मदद न देने की घोषणा की। फ्रांस ने कहा कि वह अपनी चिन्ता जाहिर करता है ओर इस क्षेत्र में संयम के लिए कहता है । फ्रांस ने भारत के

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पक्ष में रहकर कार्यवाही के तहत प्रतिबन्ध के लिए अमेरीका को चेतावनी दी। रूस ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि ''भारत ने परीक्षण कर हमें शर्मिन्दा कर दिया''। रूस ने कार्यवाही करते हुए कहा कि हम भारत के खिलाफ कोई प्रतिबन्ध नही लगाते, लेकिन अब खुला समर्थन भी नही करेगे। जर्मनी ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हए कहा कि ''हम सावधानी से देखेग कि अमेरीका किस तरह प्रतिबन्ध लगाता है'' और कार्यवाही के पिछले वर्ष के स्तर पर मदद न देने की बात कही। अमेरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिटन जो उस समय जर्मनी को यात्रा पर थे ने भारत के खिलाफ कई प्रतिबन्धों के आदेश दिये इनमें भारत को अमेरिका सहायता बन्द करना, कुछ रक्षा ओर प्रौद्योगिकी सामग्री पर रोक, भारत को अमेरीकी ऋण और ऋण गारंटी बन्द करना तथा भारत को अन्तराष्ट्रीय वित्तिय संस्थानों के कर्ज का विरोध करना शामिल है। बिल क्लिंटन के इशारे व ब्रिटिश प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर को पहल पर आयोजित आठ औद्योगिक रूप से सर्वाधिक विकसित देशों (जी0–8) की बैठक में इस बात का प्रयास किया गया कि भारत के विरूद्ध सामूहिक रूप से आर्थिक प्रतिबन्ध लगाये जाये। परन्तु इस प्रस्ताव को रूस, फ्रांस तथा ब्रिटेन के ठुकरा दिया। अतः चीन तथा अमेरीका ने व्यक्तिगत रूप से प्रतिबन्ध लगाये परन्तु पश्चिमी देशो को शीघ्र ही ज्ञात हो गयाकि प्रतिबन्धों से भारत को मजबूर नही किया जा सकता है। इसी बीच अमेरीका पहल पर संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद ने 6 जून 1998 के अपने एक प्रस्ताव द्वारा परमाणु परीक्षा करने तथा स्वयं को परमाणु शक्ति राष्ट्र घोषित करने के आरोप में भारत की निन्दा की। यह एक अभूतपूर्व कदम था, क्योकिं इससे पूर्व परमाणु परीक्षण के लिए किसी भी देश की सुरक्षा परिषद द्वारा निन्दा नही की गई थी। संयुक्त राज्य अमेरीका ने भारत के विरूद्ध आर्थिक प्रतिबन्ध परमाणु प्रसार निवारण अधिनियम (Nuclear Proliferation Prevention Act)1994 के अधीन लगाये थे। इस अधिनियम मे अमेरिका के परमाणु परीक्षण अप्रसार सम्बन्धी विभिन्न कानूनों को शामिल कर लिया गया था। भारत के विदेश मंत्री जसवंत सिह ने स्पष्ट घोषणा की कि भारत (ओर पाकिस्तान भी) अब एक परमाणु अस्त्र सम्पन्न देश है, उन्होने कहा कि यहएक वास्तविकता है, जिससे कोई इंकार कर ही नही सकता। परमाणु अस्त्र सम्पन्न राज्य (NWS) होना किसी भी अन्य देश के द्वारा किया स्तर या प्रमाण पत्र नहीं है। ''यह एक वस्तुनिष्ठ वास्तविकता (Objective Reality) है।

जब अमेरीका को यह विश्वास हो गया कि प्रतिबन्धों से भारत को नही दबाया जा सकता है, तब अमेरीकी सरकार ने भारत के साथ व्यापक बातचीत आरम्भ की। यह वार्ता भारतीय विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह तथा अमेरीकी उप विदेश मंत्री स्ट्रोब–टाल्वोट के मध्य हुई। इसका उद्देश्य भारत को व्यापक परीक्षण निषेध संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए राजी करना था, परन्तु भारत पहले ही एकतरफा घोषणा कर चुका था कि वह भविष्य में

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

परमाणु परीक्षण नहीं करेगा। प्रश्न केवल इतना था कि भारत इस संधि पर परमाणु अस्त्र सम्पन्न राज्य (NWS) के रूप में हस्ताक्षर कर सकता था, गैर परमाणु सम्पन्न राज्य के रूपमें नही जबकि अमेरिका यह चाहता था कि भारत C.T.B.T पर गैर परमाणु शक्ति के रूप में हस्ताक्षर करे, जो भारत को स्वीकार्य नही था। अमेरीकी सरकार की नीति में उल्लेखनीय सुधार हुआ ओर उसने भारत के विरूद्ध लगाये गये अनेक प्रतिबन्ध करने का निर्णय लिया। भारत ने बार–बार यह स्पष्ट किया है कि वह परमाणु अस्त्र–विहीन संसार (Nuclear Weapons Free World) के प्रति बचनबद्ध है। परन्तु जब तक अन्य परमाणु सम्पन्न देश अपने अस्त्र नष्ट नही करते, भारत न्यूनतम सुरक्षात्मक परमाणु अस्त्र रखेगा। भारत की परमाणु नीति के अनुसार वह किसी भी देश के विरूद्ध पहले परमाणु बम का प्रयोग नही करेगा और जब तक व्यापक परीक्षण संधि भेदभाव रहित नही हो जाती वह उस पर हस्ताक्षर नही करेगा। भारत और अमेरीका के मध्य परमाणु मुद्दे पर मतभेद दृष्टिकोण की भिन्नता का है। भारत का यह निर्णय की वह अपने परमाणु कार्यक्रम को बन्द नही करेगा, भारत–अमेरीकी सम्बन्धों में विवाद का एक प्रमुख मुद्दा है। जबकि अमेरिका का यह मानना है कि यदि भारत अपना परमाणु कार्यक्रम छोड़ दे तभी उसकी वास्तविक सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी। अन्ततः अमेरीकी दृष्टिकोण मे धीरे–धीरे परिवर्तन हुआ ओर जनवरी 2000 मे अमेरिका ने ये यह स्वीकार कर लिया कि भारत को यह निश्चय करने का सम्प्रभु अधिकार है कि वह किस प्रकार के ओर कितने अस्त्र रखे ताकि उसकी सुरक्षा सुनिश्चित हो सके। इस प्रकार अन्ततः अमेरिका ने भारत के परमाणु विकल्प को मान्यता प्रदान कर रिश्तों में नया उत्साह पैदा किया।

राजनीतिक और सामरिक दृष्टि से भी उपरोक्त निष्कर्ष खरा उतरता है। इस तथ्य को रेखांकित करने की आवश्यकता नहीं कि अब अमेरिका एकमात्र वैश्विक महाशक्ति है और इसलिए उसके साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखने में भारत का हित निहित है। साथ ही अमेरिका भी भारत की उपेक्षा नहीं कर सकता क्योंकि उसकी जनसंख्या विश्व में सर्वाधिक है। उसके प्राकृतिक संसाधन भंडार विशाल हैं। उसने औद्योगिक, प्रौद्योगिक और प्रतिरक्षा के क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है, और तीसरी दुनिया के राष्ट्रों में उसका महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि भारत विश्व का सबसे बड़ा जनतान्त्रिक देश है।

सुझावः

1. अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद के प्रश्न पर अमेरिका के साथ उच्चतम स्तर का सहयोग प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।
2. बदलती अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में आज अमेरिका के दृष्टिकोंण में भारत को लेकर जबरदस्त बदलाव आया है जिसके कारण अमेरिका भारत को पहले की तुलना में ज्यादा महत्व दे रहा है। इस स्थिति का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

3. दोनों देशों को आर्थिक राजनीतिक, सांस्कृतिक सम्बन्धों को मजबूत बनाने के लिए एक दूसरे के साथ परस्पर वार्ता जारी रखनी चाहिए।

संदर्भ :

घई यू0 आर0: भारतीय विदेश नीतिः– यूनियन ऐकेडमिक पब्लिशिंग कम्पनी, जालन्धर–2003 पृष्ठ–487

दीक्षित बी0 के0 : भारतीय विदेश नीति, प्रभात प्रकाश, दिल्ली–1999, पृष्ठ–383

यादव एस0 आर0 : भारत की विदेश नीति, कितबा महल, दिल्ली– 1999 पृष्ठ–437

तिवारी ओ0 पी0 : राष्ट्रीय सुरक्षा, ज्ञानदा प्रकाश, नई दिल्ली–2000 पृष्ठ–247

17. एम0एस0राजन : इण्डिया एण्ड इन्टरनेशनल अफैयर्स, लान्सर बुक, नई दिल्ली–1998 पृष्ठ–190

रत्तू आर. के. : भारतीय परमाणु परीक्षण और निःशस्त्रीरण, प्वाइंट पब्लिशर्स, जयपुर–1999 पृष्ठ–13

खन्ना बी0 एन0 एवं अरोड़ा एल0 : भारतीय विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली–2004 पृष्ठ–273

खन्ना एवं अरोड़ाः भारतीय विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली–2014

सिंह जसप्रीत : भारत और परमाणु शस्त्र, प्रभात पब्लिकेशन, नई दिल्ली–2009

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies